© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 01 | February 2016

हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा का स्थान

सुनीता रानी ,लैक्चरर (हिन्दी) , राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय , ईक्कस, जीन्द।

© iJRPS International Journal for Research Publication & Seminar

परिचय : छायावादी स्तम्भों में प्रसाद, निराला, पंत के साथ–साथ महादेवी वर्मा का अनन्यतम स्थान है। ''इनके आत्मपरक गीतों के अभिव्यंजन में हृदय के आलोडन को व्यक्त किया है।'' महादेवी का भाव–व्यंजन प्रतीकात्मकता लिए हुए हैं। इनके पद्य साहित्य में प्रायः आदि से अंत तक प्रतीकात्मकता प्रवृति में उत्तरोतर वृद्धि हुई है। इनकी कविताओं में लोक जीवन की अभिव्यक्ति इसी रूप में हुई है। महादेवी की कविताएं लोकजीवन की पीड़ा से ओत–प्रोत हैं। डा० नामवर के अनुसार 'उनकी नीर भरी दुःख की बदली' का दुःख केवल प्रणय व्यथा ही नहीं है, उसमें अनेक प्रकार के सामाजिक असंतोष घुले मिले हैं। महादवी ने अपने समय और समाज की धड़कन को प्रकृति, प्रेम, दुःख और वेदना के माध्यम से व्यक्त किया है।

जीवन काल : महादेवो वर्मा का जीवन काल 1907–1987 ई. तक माना गया है। महादेवी की रचनाओं में काव्य–ग्रंथ, नीहार (1930 ई.), रश्मि (1932 ई.), नीरजा (1935 ई), सांध्यगीत (1936 ई.), यामा (1940ई.) तथा दीपशिखा (1942 ई.), रेखा चित्र संस्मरण : में अतीत के चलचित्र (1941), स्मृति की रखाएं (1943), पथ के साथी (1956)। निबन्धों में शृंखला की कड़ियाँ (1942), क्षणदा (1956) तथा आलोचना में ''साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध (1962, सम्पादक–गंगा प्रसाद पाण्डेय)'' प्रसिद्ध मानी गई हैं।

महादेवी वर्मा छायावाद के आधार स्तम्भों में से एक हैं। अज्ञात प्रियतम के प्रति वेदना भाव की अभिव्यक्ति उनके काव्य में प्रमुखता से हुई है। वेदना और करूणा की प्रधानता के कारण ही महादेवी जी को आधुनिक मीरा कहा जाता है। अज्ञात प्रियतम के प्रति विरह वेदना की भावना के

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 01 | February 2016

कारण ही उनके काव्य में रहस्यवाद की प्रमुखता है। इसी वेदना में महादेवी जी को व्यग्र बनाकर उन्हें अपनी तुलना 'नीर भरी बदली' से करने को विवश कर दिया है।

''मैं नीर भरी दुःख की बदली,
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली।।''

महादेवी वर्मा की विरह अनुभूति अत्यन्त उन्नत एवं उत्कृष्ट है, जिसमें प्रेम का आवेग है, वेदना को तीव्रता है और व्यक्तिा चित्त की मनोदशाओं का निरूपण है। महादेवी जी की मान्यता है–**''दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एकसूत्र में बांधकर रखने की क्षमता रखता है।......मनुष्य सुख को अकेले भोगना चाहता है किन्तु दुःख सबको बांटकर विश्व जीवन में अपने जीवन को, विश्व वेदना में अपनी वेदना का इस प्रकार मिला देना चाहता है, जिस प्रकार एक जल बिन्दु समुद्र में मिल जाता है।''**

महादेवी वर्मा की विरह अनुभूति का निम्न शीर्षकों में किया जा सकता है।

1. **प्रेम वेदना की गहनता**– महादेवी वर्मा के काव्य में प्रेम वेदना की गहनता सर्वत्र विद्यमान है। वेदना में इतनी प्रिय है कि वे उसका साथ नहीं छोड़ना चाहती हैं क्योंकि इसी वेदना के माध्यम से उन्होंने सर्वशक्तिमान चेतना में ईश्वर का दर्शन किया है। यथा–

''मेरे बिखरे प्राणों में सारी करूणा ढुलका दो,
मेरी छोटी सीमा में अपना असितत्व मिटा दो।
पर शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की क्रीड़ा,
तुमको पीड़ा में ढूंढ़ा तुममें ढूढूंगी पीड़ा।।''

2. **करूणा की प्रधानता**– विरह की तीव्रानुभूति के कारण महादेवी वर्मा जी के हृदय में अपार करूणा दिखाई देती है। महादेवी जी के समय का निराशावाद भी इस करूणा को उत्पन्न करने में

सहायक सिद्ध हुआ है। करूणा का भाव कवयित्री के अनुसार अत्यन्त पवित्र है, उसकी स्पर्श छाया से दुःख भी निखर उठता है। यथा–

''शून्य मन्दिर में बनूंगी आज मैं प्रतिमा तुम्हारी।
अर्चना हो शूल भोले, क्षार दृग जल अर्ध्य हो लें।
आज करूणा स्नात उजला दुःख ही मेरा पुजारी।''

3. **नारी सुलभ सात्विकता**– महादेवी जी हृदय में वेदना की कोमल भावनाओं के साथ–साथ नारी हृदय की स्वाभाविक सात्त्विकता भी समाहित है। उनके गीतों की प्रेम वेदना में न द्वेष है, न घृणा है, न कटुता है, न प्रतिकार। यदि है तो केवल वेदना, जिसमें उनका अपना नहीं, बल्कि समस्त मानव जाति का असीम शोक समाया हुआ है। उनकी करूणा पुकार मं नारी हृदय की वेदना का स्पष्ट अंकन दीख पड़ता है। यथा–

''जो तुम आ जाते एक बार!
कितनी करूणा कितने संदेश पथ में बिछ जाते बन पराग,
गाता प्राणों का तार–तार अनुराग भरा उन्माद राग,
आंसू लेते वे पद पखार।''

4. **महादेवी की आध्यात्मिकता**– महादेवी वर्मा की विरहानुभूति अध्यात्म प्रधान है किन्तु वह परम्परागत धार्मिक भावनाआं से न जुड़कर मनुष्य के जीवन से अधिक जुड़ी है। अलौकिक के साथ उकनी लौकिक प्रणयानुभूति का सामंजस्य उनकी भावना की सफल अभिव्यक्ति करता है। अपनी इसी आध्यात्मिक अनुभूति के कारण वे अपने अज्ञात प्रियतम को लौकिक वस्तुओं में खोजती है।

5. **भक्ति की तन्मयता**– महादेवी जी के काव्य में आध्यात्मिकता के साथ साथ भक्ति भाव भी मुखरित होता है। भक्ति भाव से पूजा अर्चना करने के लिए देवी की प्रतिमा के श्रृंगार की सारी सामग्री सजाकर वे पूजा–अर्चना में लीन हो जाती है।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 01 | February 2016

6. **विरह वेदना की निरन्तरता–** महादेवी जी के काव्य में विरह भावना का निरन्तर प्रवाह है, उसमें नदी की तीव्र धारा के समान अनन्य स्रोत हैं। महादेवी की विरह वेदना कृत्रिम न होकर स्वाभाविक है। इसलिए वे अपने जीवनदीप के साथ स्वयं भी प्रज्वलित रहने की कामना करती हैं। वे इस जीवन द्वीप के प्रियतम के पथ को आलोकित करना चाहती हैं।

''मधुर–मधुर मेरे दीपक जल
युग–युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर।''

महादेवी की विरहानुभूति में गहन प्रेम वेदना का तत्त्व व्याप्त है। वे करूणा से ओतप्रोत विरह की ऐसी कवयित्री हैं जो अज्ञात प्रियतम की खोज में लीन हैं। उनके विरह में आघ्यात्मिकता, पावनता, सात्विकता एवं उदात्तता है। यह विरह वेदना, मौन, नीरव तथा एकाकी है। महादेवी जी वेदन के साम्रज्य की एकछत्र साम्राझी हैं। आत्मिक शांति व आत्मिक परिपूर्णता के लिए कोई सुख उन्हें नहीं चाहिए। इसीलिए वे वेदना की साम्राझी कही जाती हैं।

महादेवी वर्मा की रहस्य भावना

महादेवी वर्मा छायावाद की प्रमुख कवयित्री हैं। छायावादी कविता की एक प्रमुख विशेषता है, उमसें पाई जाने वाली रहस्यवादी भावना। महादेवी जी कविताओं में भी इस रहस्यवादी भावना को व्यक्त किया गया है। यथा–

बीन भी हूं मैं तुम्हारी रागिनी भी हूं।
दूर हूं तुमसे अखण्ड सुहागिनी भी हूं।।

महादेवी जी के रहस्यवाद में मीरा की तरह माधुर्य भाव, प्रेमजन्य अनुभूति एवं वेदना की झलक दिखाई पड़ती है। महादेवी जी विश्व में समाज के दुःख को अनुभव करती हैं किन्तु अपने

लक्ष्य को पाने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहती दिखाई देती हैं। महादेवी जी का जीवनदीप लगतार प्रज्वलित है और उस पथ को प्रकाशित करता रहता है जिधर से पियतम के आने की संभावना है–

मधुर–मधुर मेरे दीपक जल
युग–युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल
प्रियतम का पथ आलोकित कर।।

छायावादी काव्य में वेदना और रहस्य भावना का जो समावेश महादेवी जी के गीतों में मिलता है, वह अन्यत्र कहीं नहीं है। उनके सम्पूर्ण काव्य में प्रेम की गहनता विद्यमान है। वेदना और करूणा को कविता का मुख्य तत्व माना गया है।

महादेवी क काव्य में प्रगीति तत्व

गीत काव्य में निम्न मुख्य तत्व निरूपित किए गए हैं।

1. आत्माभिव्यंजकता
2. रागात्मकता
3. काल्पनिकता
4. संगीतात्मकता
5. भावगत एकरूपता
6. आकारगत लघुता तथा
7. शैलीगत सुकुमारता

महादेवी जी की कविता में गीत काव्य की उपरोक्त वर्णित सभी विशेषताएं उपलब्ध होती हैं। उन्होंने अपने हृदय की संचित अनुभूतियों को ही गीत के रूप में उतारा है। महादेवी जी ने अपने सुख दुःख तथा हर्ष विषाद को ही अपने गीतों का विषय बनाया है। उनके गीतों में व्यक्ति एवं जगत का दुःख सर्वत्र व्याप्त है। यथा–

विरह का जलजात जीवन विरह का जलजात।
आंसुओं का कोष उर, दृग अश्रु की टकसाल,
सरल जलकण से बने घन स क्षणिक मृदु गात।
जीवन विरह का जलजात।।

महादेवी जी वेदना एवं पीड़ा की कवयित्री हैं। उन्होंने अपने भावनाओं को गीत के रूप में सफल अभिव्यक्ति की है। उनकी गीतों में आत्माभिव्यंजन ह। अन्तर्मुखी भाव साधना है। ये गीत एक भाव को पूर्णता के साथ अभिव्यक्त करते हैं। महादेवी जी की भाषा कोमल, सुकुमार एवं मधुर पदों से युक्त है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण महादेवी जी का प्रगीत काव्य सर्वाधिक प्रभावकारी एवं सरस बन गया है। निश्चत ही अपने गीतों के कारण महादेवी जी को आधुनिक मीरा कहा जाना उचित है।

महादेवी जी की प्रतीक योजना

महादेवी जी की कविता में वेदना एवं रहस्यवाद की प्रधानता है। उन्होंने अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में प्रतीकों का सहारा लिया है। प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग करके महादेवी जी ने एक ओर तो सूक्ष्म भावों एवं व्यापारों को अभिव्यक्त किया है तो दूसरी ओर उसमें कला का अपूर्व चमत्कार भी समाविष्ट कर दिया है। महादेवी जी ने निम्न गीत में दीपक को अपने जीवन का प्रतीक मानकर उसे निरन्तर प्रियतम के पथ को आरोपित करने का सुझाव दिया है :

मधुर–मधुर मेरे दीपक जल
युग–युग प्रतिक्षण प्रतिपल
प्रियतम का पथ आलोकित कर।

महादेवी जी ने प्रकृति का प्रयोग भी प्रतीक योजना के लिए किया है। निम्न गीत में उन्होंने दीपक को विरह वेदना में प्रज्वलित जीवन का प्रतीक माना है:

यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो।
रजत शंख घड़ियाल स्वर्णवंशी वीणा स्वर,
गये आरती बेला को शत–शत लय से भर,
जब था कल कण्ठों का मेला बिहंसे उपल तिमिर था खेला
अब मन्दिर में इष्ट अकेला इसे अजिर का शून्य गलाने को
गलने दो।।

स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि महादेवी जी ने प्रतीकों का प्रयोग करते हुए अपने काव्य में रमणीयता का विधान किया है। प्रतीकात्मकता प्रायः सभी छायावादी कवियों की एक प्रमुख काव्यगत विशेषता मानी गई है।

महादेवी जी ने अपने काव्य में प्रतीक योजना, विम्ब विधान, रहस्यानुभूति तथा वेदना को अपनाकर हिन्दी साहित्य में अपने काव्य को शिखरता प्रदान की है। महादेवी जी ने अपनी कविता का माध्यम पूरी तरह से गीत को बनाया है। इसी कारण से उनके काव्य में वह वैविध्य नहीं मिलता जो छायावाद के वरिष्ठ कवियों में मिलता है।

हिन्दी साहित्य में मीराबाई का विशेष स्थान रहा है। महादेवी वर्मा के कला कौशल, प्रतीक योजना, वेदना तत्व, रहस्य भावना, प्रगीति तत्व एवं प्रतीक योजना का सफल एवं उत्कृष्ट प्रयोग के कारण इनको आधुनिक मीरा का स्थान दिया गया है।

सुनीता रानी
लैक्चरर (हिन्दी)
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
ईक्कस, जीन्द।